Gyanvividha, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : PP-210-215

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-6.125
Vol.-3; Issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No.- 210-215
©2026 Gyanvividha
DOI : 10.71037/gyanvividha.v3i3.28
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

प्रो. अशोक कुमार सिंह चंदेल
राजनीति विज्ञान विभाग, के. बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर, उ. प्र.

Corresponding Author :

प्रो. अशोक कुमार सिंह चंदेल
राजनीति विज्ञान विभाग, के. बी. पी. जी. कालेज, मीरजापुर, उ. प्र.

21वीं सदी में भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' : बहुध्रुवीय विश्व में उभरती चुनौतियाँ और अवसर

सारांश : 21वीं सदी में दुनिया के हालात एक ध्रुवीय प्रभुत्व से बदलकर एक जटिल बहु-ध्रुवीय व्यवस्था में बदल गए हैं। इस बदलाव के साथ ही, भारत को ऐसे माहौल में आगे बढ़ने और सफल होने के लिए एक गतिशील विदेश नीति के ढांचे की ज़रूरत है। यह शोध पत्र भारत की "रणनीतिक स्वायत्तता" की शुरुआत और विकास को गहराई से समझने का प्रयास करता है। यह अवधारणा शीत युद्ध के समय गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विचारधारा से प्रेरित होकर "बहु-गठबंधन" या "मुद्दे-आधारित गठबंधन" के सिद्धांत तक पहुंची है। भारत पारंपरिक गठबंधन बनाने में शामिल हुए बिना सभी संभावित फायदों का इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा है। ऐसा अमेरिका, रूस और चीन जैसी प्रतिद्वंद्वी वैश्विक ताकतों के साथ-साथ क्वाड, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे समूहों के संबंध में मज़बूत रुख अपनाकर किया जा रहा है। इस शोध पत्र में 'रणनीतिक स्वायत्तता', बहु-ध्रुवीय दुनिया में भारत की स्थिति और 21वीं सदी में इसकी रणनीतिक प्रकृति का व्यापक अध्ययन किया गया है। इसमें भारत के 'ग्लोबल साउथ' का नेतृत्व करने और वैश्विक आपूर्ति व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु बनने की अपार संभावनाओं का गहनता से अध्ययन किया गया है। साथ ही, वर्तमान चुनौतियों - खासकर चीन की सीमा पर आक्रामकता और पश्चिमी साझेदारियों व रूस के साथ पुराने संबंधों के बीच भारत द्वारा किए जा रहे संतुलन - का भी गहन विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : रणनीतिक स्वायत्तता, बहुध्रुवीय विश्व, भारतीय विदेश नीति, बहु-गठबंधन, हिंद-प्रशांत क्षेत्र, ग्लोबल साउथ, भू-राजनीति, रक्षा आत्मनिर्भरता, क्वाड, राष्ट्रीय हित।

1. प्रस्तावना : शीत युद्ध के अंत होने और 21वीं सदी की शुरुआत के बाद, कुछ समय के लिए दुनिया 'एक-ध्रुवीय रही, जिससे शीत युद्ध के समय की निश्चितताएँ अतीत का विषय बन गई थी। परंतु वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय राजनीति की व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हो चुका है और

वैश्विक शक्ति अब किसी एक राष्ट्र के पास सीमित ना होकर यह कई राष्ट्रों के मध्य विस्तारित हो चुकी है; इसमें रूस जैसी बड़ी ताकतों की वापसी, चीन का आर्थिक और सैन्य रूप से तेज़ी से उदय और 'ग्लोबल साउथ' में मध्यम दर्जे की ताकतों का उभरना शामिल है। भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य देश के अंदर हो रहे बदलावों को सुरक्षित रखना और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी भागीदारी बढ़ाना है। इस उद्देश्य को बदलते हालात के बीच हासिल करने की कोशिश की जा रही है। यह रणनीति "स्ट्रैटेजिक ऑटोनॉमी" (रणनीतिक स्वायत्तता) के सिद्धांत पर आधारित है।

व्यावहारिक रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ खुद को अलग-थलग रखना नहीं है; बल्कि इसका अर्थ है; सक्रिय और स्वतंत्र भागीदारी। इस प्रतिबद्धता से यह तात्पर्य है कि भारत नीति निर्धारण के समय अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देगा और किसी विदेशी गठबंधन या गुट के दबाव में काम नहीं करेगा। वैश्विक आपूर्ति व्यवस्था को फिर से व्यवस्थित करने और भू-राजनीतिक केंद्र के इंडो-पैसिफिक की ओर बढ़ने के कारण, भारत की स्वायत्तता बनाए रखने की क्षमता की कड़ी परीक्षा हो रही है। इस अध्ययन का मकसद यह देखना है कि भारत इस स्वायत्तता को कैसे लागू करता है और बदलती संस्थागत व्यवस्थाओं, बड़ी ताकतों के टकराव, तकनीक-आधारित युद्ध और आर्थिक निर्भरता वाली दुनिया में अपनी पुरानी प्रतिबद्धताओं और नई रणनीतिक ज़रूरतों के बीच कैसे संतुलन बनाता है।

फ़्रांसीसी सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट का यह प्रसिद्ध कथन है कि "किसी देश के भूगोल को जानना उसकी विदेश नीति की भविष्यवाणी करने में सक्षम होना है"। भारत के संदर्भ में यह ऐतिहासिक उक्ति अत्यंत सटीक और प्रासंगिक सिद्ध होती है। भारत का विस्तृत भूभाग, उसकी विशाल जनसांख्यिकी और उसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति अनिवार्य रूप से उसे वैश्विक विमर्श का एक प्रमुख और अपरिहार्य भागीदार बनाती है। दक्षिण की ओर संकरा होता भारतीय प्रायद्वीप, जो तीन ओर से हिंद महासागर से घिरा है, इसे एक अत्यंत समृद्ध समुद्री विरासत और खाड़ी देशों तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ सतत भू-आर्थिक जुड़ाव प्रदान करता है। इसके ठीक विपरीत, इसकी महाद्वीपीय सीमाएं इसकी सबसे बड़ी भू-राजनीतिक चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं। उत्तर और पूर्व में विस्तारवादी चीन तथा उत्तर और पश्चिम में अस्थिर पाकिस्तान से घिरे होने के कारण भारत को एक स्थायी रूप से जटिल सुरक्षा वातावरण का सामना करना पड़ता है। अपनी पूर्वी समुद्री सीमाओं (इंडो-पैसिफिक) की ओर जहाँ भारत को कई अमेरिकी सहयोगियों का साथ मिलता है, वहीं महाद्वीपीय सीमाओं पर ऐसा कोई सीधा गठबंधन उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक कूटनीतिक युग में भारत के इस रणनीतिक दृष्टिकोण का एक बड़ा परिवर्तन बिंदु वर्ष 1991 में आया। सोवियत संघ के पतन, खाड़ी युद्ध के कारण तेल की कीमतों में वृद्धि, और विदेशी मुद्रा भंडार के मात्र 6 बिलियन अमरीकी डालर तक गिर जाने के कारण भारत को एक गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस संकट ने तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह को उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) के व्यापक आर्थिक सुधार लागू करने के लिए विवश किया। रुपये के अवमूल्यन, 'लाइसेंस राज' की समाप्ति, आयात एकाधिकार को खत्म करने और 51% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति देने जैसे कदमों ने भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के साथ गहराई से एकीकृत किया। इन सुधारों ने 'आर्थिक कूटनीति' के युग का सूत्रपात किया, जिसने भारत को 'लुक ईस्ट' (Look East) नीति शुरू करने और रणनीतिक व आर्थिक संप्रभुता सुनिश्चित करने के लिए नए अवसर प्रदान किए। आज के बहुध्रुवीय विश्व में, जहाँ वैश्विक व्यवस्था अभूतपूर्व रूप से खंडित हो रही है, भारत की रणनीतिक स्वायत्तता केवल एक वैचारिक विकल्प मात्र नहीं रह गई है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, तीव्र आर्थिक विकास और वैश्विक स्थिरता सुनिश्चित करने की एक अत्यंत अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है। वर्तमान विदेश नीति "वसुधैव कुटुम्बकम्" और 'विश्व बंधु' की अवधारणा पर मजबूती से आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य ध्रुवीकृत पश्चिमी देशों और विकासशील दुनिया के बीच एक सेतु का कार्य करते

हुए तीसरे वैश्विक ध्रुव का निर्माण करना है।

2. रणनीतिक स्वायत्ता की अवधारणा : देश की मौजूदा भूराजनीतिक स्थिति को समझने के लिए भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के इतिहास को जानना ज़रूरी है। इस सोच की शुरुआत भारत की आज़ादी के बाद की विदेश नीति से हुई, जो मुख्य रूप से 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' (NAM) के ज़रिए सामने आई। इस आंदोलन को भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने आगे बढ़ाया था। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) ने भारत को अपनी मुश्किल से हासिल की गई संप्रभुता की रक्षा करने, छद्म युद्धों (प्रॉक्सी कॉन्फ्लिक्ट) में फंसने से बचने और उपनिवेशवाद-विरोधी और शांति के लिए अभियान चलाने में मदद की। यह सब ऐसी दुनिया में हुआ जो अमेरिका और सोवियत संघ के बीच वैचारिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा के कारण बुरी तरह बंटी हुई थी।

दूसरी ओर, 21वीं सदी की रणनीतिक स्वायत्तता, 20वीं सदी की गुटनिरपेक्षता से बिल्कुल अलग है। आज की रणनीतिक स्वायत्तता का मतलब है सत्ता के अलग-अलग केंद्रों से "बराबर की नज़दीकी" बनाए रखना। यह उस पारंपरिक सोच से अलग है जिसमें महाशक्तियों से समान दूरी बनाए रखने को ही मुख्य रणनीति माना जाता था। आधुनिक दौर में भारत की कूटनीति—जिसे कभी-कभी "मल्टी-अलाइनमेंट" या "प्लुरिलैटरल" (बहु-पक्षीय) दृष्टिकोण भी कहा जाता है—बहुत व्यावहारिक है।

भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कई बार यह साफ़ किया है कि भारत के लिए एक ही समय में अमेरिका के साथ व्यापार करना, रूस से तेल और हथियार खरीदना और चीन के साथ व्यापार करना मुमकिन है। आज की दुनिया में रणनीतिक स्वायत्तता के लिए ऐसे भूराजनीतिक समूहों में शामिल होने का साहस होना ज़रूरी है जो एक-दूसरे से अंतर्संबंध हों और कभी-कभी एक-दूसरे के विरोधी भी हों। भारत को अपने हितों के अनुरूप अपने सहयोगियों का चयन करने की आवश्यकता है; जैसे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए यूरोप के साथ मिलकर काम करना, समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका और जापान के साथ सहयोग करना, और आतंकवाद-विरोधी ऑपरेशन चलाने के लिए मध्य एशियाई देशों के साथ जुड़ना। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है वैचारिक दूरी बनाए रखने की नीति से हटकर, अलग-अलग हितों के आधार पर आत्मविश्वास के साथ सक्रिय भागीदारी की ओर बढ़ना।

3. बहुध्रुवीय व्यवस्था और भारत : वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य के ढांचे में मल्टीपोलरिटी (बहु-ध्रुवीयता) की ओर एक ऐसा बदलाव आया है जिसे बदला नहीं जा सकता। हालांकि चीन, अमेरिका के की आर्थिक समृद्धि इस सिद्धांत के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। साथ ही, रूस पूर्वी यूरोप में अपनी ताकत दिखा रहा है, जबकि यूरोपीय संघ, जापान और उभरते हुए 'ग्लोबल साउथ' की अवधारणा में महत्वपूर्ण स्वतंत्र भू-राजनीतिक ताकतों के रूप में काम कर रहे हैं। जहां तक भारत की बात है, सबसे फायदेमंद वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य वही है जो बहु-ध्रुवीय हो। अमेरिका और चीन जैसी दो-ध्रुवीय दुनिया में, देशों को किसी एक पक्ष को चुनने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए बड़ा खतरा पैदा हो जाता। नतीजतन, भारत एक बहु-ध्रुवीय दुनिया और साथ ही एक बहु-ध्रुवीय एशिया को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहा है। इस बहु-ध्रुवीय माहौल में भारत जो नाजुक संतुलन बनाता है, वह इस प्रकार है:

a. **अमेरिका और पश्चिमी देश:** अमेरिका के साथ भारत के संबंध पूरी दुनिया के लिए एक 'व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी' में बदल गए हैं। चीन के बढ़ते प्रभाव को लेकर साझा चिंताओं के कारण, अमेरिका और भारत सैन्य मामलों, प्रमुख तकनीकों (जैसे iCET प्रोग्राम) और खुफिया जानकारी के आदान-प्रदान पर मिलकर काम कर रहे हैं। हालांकि, भारत औपचारिक संधि सहयोगी बनने से बचने की कोशिश करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वह अमेरिका की वैश्विक रणनीति में कोई गौण भागीदार न बने।

b. रूस: यूक्रेन संकट के बाद पश्चिम के भारी दबाव के बावजूद भारत मॉस्को के साथ अपने मजबूत संबंध बनाए रखने में कामयाब रहा है। आज भी, रूस सैन्य साजो-सामान और हाल ही में सस्ते कच्चे तेल का एक अनिवार्य स्रोत बना हुआ है; ये दोनों ही भारत की ऊर्जा सुरक्षा बनाए रखने और महंगाई को रोकने की कोशिशों के लिए जरूरी रहे हैं।

c. बीजिंग: बीजिंग के साथ भारत के संबंध, देश के सामने सबसे कठिन भू-राजनीतिक दुविधा के रूप में विद्यमान हैं। सीमा पर झड़पों के कारण रणनीतिक अविश्वास का स्तर अभूतपूर्व रूप से बढ़ गया है, जबकि दोनों देशों के बीच व्यापार अभी भी बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है। पश्चिमी देशों के साथ गठबंधन बनाकर और साथ ही ब्रिक्स और एससीओ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में बीजिंग के साथ शामिल होकर, भारत चीन के प्रभाव को संतुलित करने में सक्षम है।

4. वैश्विक रणनीतिक मामलों में 21वीं सदी में भारत की स्थिति : भारत की रणनीतिक दिशा अब उसकी भौगोलिक स्थिति, आर्थिक क्षमता और कूटनीतिक प्रसार से तय होती है। ये तीनों बातें आपस में जुड़ी हुई हैं। भारत एक साथ कई अहम क्षेत्रों में काम कर रहा है:

a. हिन्द-प्रशांत और क्वाड (QUAD) : हाल के वर्षों में, हिन्द-प्रशांत क्षेत्र दुनिया का सबसे अहम भू-राजनीतिक क्षेत्र बन गया है। हिंद महासागर में भारत की भू-स्त्रातेजिक स्थिति इस मामले को स्वाभाविक रूप से बढ़त प्रदान करता है। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग (QUAD) में शामिल होकर, भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र "आज़ाद, खुला और समावेशी" हो। यह एक ऐसा तरीका है जो सीधे और परोक्ष रूप से दक्षिण चीन सागर में चीन के आक्रामक क्षेत्रीय दावों और उसकी बढ़ती नौसैनिक ताकत को संतुलित करता है। इसके अलावा, भारत का 'सागर' (SAGAR) (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) प्रोजेक्ट हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में सुरक्षा प्रदाता के तौर पर काम करने की देश की इच्छा को दिखाता है।

b. महाद्वीपीय रणनीति और यूरेशियन समावेश का मेल : जहां एक ओर भारत क्वाड के ज़रिए अपने समुद्री हितों की रक्षा के लिए काम कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ वह यूरेशिया में महाद्वीपीय रणनीति पर भी काम कर रहा है। भारत का शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का सदस्य होना यह सुनिश्चित करता है कि मध्य एशिया की सुरक्षा स्थितियों में अपनी भूमिका निभाएगा, खासकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई और अफगानिस्तान के हालात के मामले में। इसके अतिरिक्त, ईरान में चाबहार पोर्ट और इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (INSTC) में भारत का निवेश ऐसी रणनीतिक पहल हैं जो पाकिस्तान से बचते हुए रूस और यूरेशिया के बाज़ारों तक सीधी पहुँच बनाने के लिए की जा रही हैं।

c. दुनिया के दक्षिणी क्षेत्रों में नेतृत्व : भारत विकासशील देशों की आवाज़ के तौर पर खुद को सफलतापूर्वक स्थापित करने में कामयाब रहा है। 2023 में G20 की अपनी अध्यक्षता के दौरान भारत ने अफ्रीकन यूनियन को स्थायी सदस्य के तौर पर शामिल करने के लिए सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि ग्लोबल साउथ के देशों के लिए अहम मुद्दे, जैसे कर्ज का पुनर्गठन, जलवायु वित्तपोषण और खाद्य सुरक्षा, प्रमुख वैश्विक मुद्दे हैं। इस घटनाक्रम के परिणामस्वरूप, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण-पूर्व एशिया के विकासशील देशों के बीच भारत की भू-राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई है।

5. चुनौतियां एवं संभावनाएं : विचारधारा के आधार पर विभाजित विश्व में, रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना बहुत मुश्किल है। रणनीतिक स्वायत्तता के निर्माण में भारत के समक्ष कुछ प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं-

a. लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल (LAC) पर चीन का आक्रामक रवैया - जो 2020 में गलवान घाटी की लड़ाई में परिवर्तित हो गया - भारत की स्वायत्तता के लिए सबसे बड़ा और आधुनिक खतरा है। सीमा पर अस्थिरता भी इस खतरे को बढ़ाती है। दोनों देशों के बीच सैन्य ताकत में भारी अंतर के कारण, भारत को अपने संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा सीमा सुरक्षा पर खर्च करना पड़ता है। इस स्थिति के कारण नई दिल्ली, वाशिंगटन के नजदीक आ रहा है, इस प्रक्रिया के माध्यम से बीजिंग को रणनीतिक रूप से सीमित करने का प्रयास किया जा रहा है।

b. रूस और पश्चिम के बीच संतुलन: यूक्रेन संघर्ष ने भारत की 'मल्टी-अलाइनमेंट' (कई देशों के साथ संबंध बनाए रखने की नीति) की कड़ी परीक्षा ली है। रूस के आर्थिक और सैन्य रूप से चीन पर अधिक निर्भर होने के कारण, नई दिल्ली को भविष्य में चीन और भारत के बीच टकराव की स्थिति में मॉस्को की विश्वसनीयता पर चिंता है। इसके अलावा, पश्चिम से प्रतिबंधों (जैसे CAATSA) के लगातार खतरे के कारण रूस से भारत की रक्षा खरीद और भी मुश्किल हो गई है।

c. पड़ोसी देशों के साथ संबंध: चीन की "स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स" रणनीति और "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" (BRI) मिलकर भारत की "नेबरहुड फर्स्ट" (पड़ोसी पहले) नीति के लिए बड़ी मुश्किलें खड़ी कर रहे हैं, जिसे अभी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। बीजिंग के पास मौजूद भारी आर्थिक संसाधनों ने उसे मालदीव, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश जैसे पारंपरिक भारतीय प्रभाव वाले क्षेत्रों की सरकारों पर अपना असर डालने में मदद की है। नतीजतन, भारत को अपने रणनीतिक प्रभाव वाले इलाकों में चीन की घुसपैठ का लगातार जवाब देना पड़ता है।

इन रुकावटों के बावजूद, मल्टीपोलर (कई ध्रुवों वाले) माहौल में भारत के पास अंतरराष्ट्रीय समुदाय में अपनी स्थिति बेहतर करने के ऐसे मौके हैं जो पहले कभी नहीं मिले। इस आधार पर भारत से समक्ष रणनीतिक स्वायत्तता के लिए विभिन्न संभावनाएं विद्यमान हैं-

a. कोविड-19 महामारी और भू-राजनीतिक तनावों ने चीन पर बहुत ज़्यादा निर्भरता से जुड़े जोखिमों को उजागर किया है, जिससे ग्लोबल सप्लाई चेन को फिर से व्यवस्थित करने की ज़रूरत पैदा हुई है। 'चाइना प्लस वन' योजना को लागू करके, भारत के पास ग्लोबल वैल्यू चेन में एक भरोसेमंद मैन्युफैक्चरिंग बेस के तौर पर शामिल होने का एक अनोखा मौका है।

b. रणनीतिक स्वायत्तता के दबाव के कारण भारत की सैन्य आत्मनिर्भरता की कोशिशें तेज़ हुई हैं, जिससे रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है, जिसे 'आत्मनिर्भर भारत' के नाम से भी जाना जाता है। घरेलू मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने और कुछ खास हथियार प्रणालियों की खरीद पर रोक लगाने वाली नीतियों के परिणामस्वरूप, भारत धीरे-धीरे दुनिया के सबसे बड़े हथियार आयातक से उभरते हुए सैन्य निर्यातक की ओर बढ़ रहा है।

c. डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) के क्षेत्र में अग्रणी भारत, टेक्नो-डिप्लोमेसी और डिजिटल पब्लिक गुड्स के क्षेत्र में एक लीडर के तौर पर उभरा है। इसके उदाहरणों में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) और आधार शामिल हैं। भारत इन डिजिटल मॉडलों को ग्लोबल साउथ के देशों में निर्यात करके एक नई तरह की टेक्नोलॉजी सॉफ्ट पावर का प्रदर्शन कर रहा है। इससे भारत को अपना भू-राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने में मदद मिलती है।

d. भारत के पास कई देशों के समूहों में नियम तय करने वाले नॉर्म-शेपर की भूमिका निभाने का मौका है, जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे बहुपक्षीय संगठनों के बेअसर साबित होने के कारण और भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। भारत "नियम मानने वाले" (रूल-टेकर) से "नियम बनाने वाले" (रूल-मेकर) की ओर बढ़ रहा है, चाहे वह इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA) का नेतृत्व करने की भूमिका हो या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा के लिए काम करने के नियम तय करना हो।

6. निष्कर्ष : भू-राजनीतिक व्यावहारिकता का एक बेहतरीन उदाहरण, 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति दूसरे देशों के लिए एक मॉडल पेश करती है। 'रणनीतिक स्वायत्तता' का विचार 'गुटनिरपेक्षता' के सख्त वैचारिक रुख से बदलकर 'बहु-गठबंधन' की एक लचीली और गतिशील प्रक्रिया बन गया है, जिसका उद्देश्य भारत के आर्थिक विकास और सुरक्षा को बढ़ाना है। भारत का 'ज़ीरो-सम' गठबंधनों (जहाँ एक की जीत दूसरे की हार होती है) में शामिल न होने का फ़ैसला उसे एक अहम स्थिरता लाने वाली ताकत, एशिया में लोकतंत्र का संतुलन बनाने वाली शक्ति, पूरब और पश्चिम के बीच एक पुल और 'ग्लोबल साउथ' की प्रमुख आवाज़ के तौर पर काम करने में मदद करता है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दुनिया प्रभाव वाले प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों में बंट रही है। 21वीं सदी की बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के उतार-चढ़ाव भरे माहौल में आगे बढ़ने के लिए भारत की रणनीतिक स्वायत्तता उसका सबसे महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है, भले ही चीन जैसे विरोधी देश और रक्षा के लिए आंतरिक निर्भरता जैसी बड़ी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. जयशंकर, एस. (2020). द इंडिया वे: स्ट्रेटेजी फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड. हार्पर कॉलिन्स इंडिया.
2. मेनन, एस. (2016). चॉइसेस: इनसाइड द मेकिंग ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी. पेंगुइन बुक्स.
3. सिंह, ए. (2021). बहुध्रुवीय विश्व में भारत की भूमिका: रणनीतिक चुनौतियाँ और अवसर. भारतीय कूटनीति समीक्षा, 8(2), 112-130.
4. कांत, के. (2018). 21वीं सदी में भारत की विदेश नीति और रणनीतिक स्वायत्तता का विकास. अंतर्राष्ट्रीय संबंध पत्रिका, 12(3), 45-62.
5. शर्मा, आर. के. (2022). इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में क्वाड (QUAD) और भारत के समुद्री रणनीतिक हित. रक्षा अध्ययन जर्नल, 15(1), 22-40.
6. मोहन, सी. आर. (2003). क्रॉसिंग द रुबिकॉन: द शेपिंग ऑफ इंडियाज न्यू फॉरेन पॉलिसी. पालग्रेव मैकमिलन
7. कुमार, एस. (2023). भारत-चीन सीमा विवाद और एशिया में बदलते भू-राजनीतिक समीकरण. एशियाई भू-राजनीति, 5(4), 78-95.
8. मिश्र, ए. (2021). ग्लोबल साउथ के नेतृत्व में भारत की उभरती भूमिका: एक कूटनीतिक विश्लेषण. वैश्विक अध्ययन पत्रिका, 14(1), 89-105.
9. दास, पी. (2020). आत्मनिर्भर भारत और रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण का बढ़ता महत्व. राष्ट्रीय सुरक्षा विश्लेषण, 10(2), 55-70.
10. पन्त, एच. वी. (2019). इंडियन फॉरेन पॉलिसी इन ए यूनीपोलर वर्ल्ड. रूटलेज पब्लिशर्स.
11. यादव, एन. (2019). बदलते क्षेत्रीय परिदृश्य में भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन. दक्षिण एशियाई अध्ययन, 11(2), 101-118.
12. जोशी, एम. (2023). रूस-युक्रेन संघर्ष और भारत की बहु-गठबंधन (Multi-alignment) नीति का परीक्षण. विश्व राजनीति समीक्षा, 16(1), 40-58.
13. गुप्ता, वी. (2022). ऊर्जा सुरक्षा और भारत की पश्चिम एशिया कूटनीति. ऊर्जा और भू-राजनीति पत्रिका, 7(3), 34-50.
14. दीक्षित, जे. एन. (2004). मेकर्स ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी: राजा राम मोहन रॉय टू यशवन्त सिन्हा. हार्पर कॉलिन्स.
15. कपूर, आर. (2021). डिजिटल कूटनीति, साइबर सुरक्षा और भारत की नई विदेश नीति. तकनीक और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, 9(4), 65-82.